Artboard 1

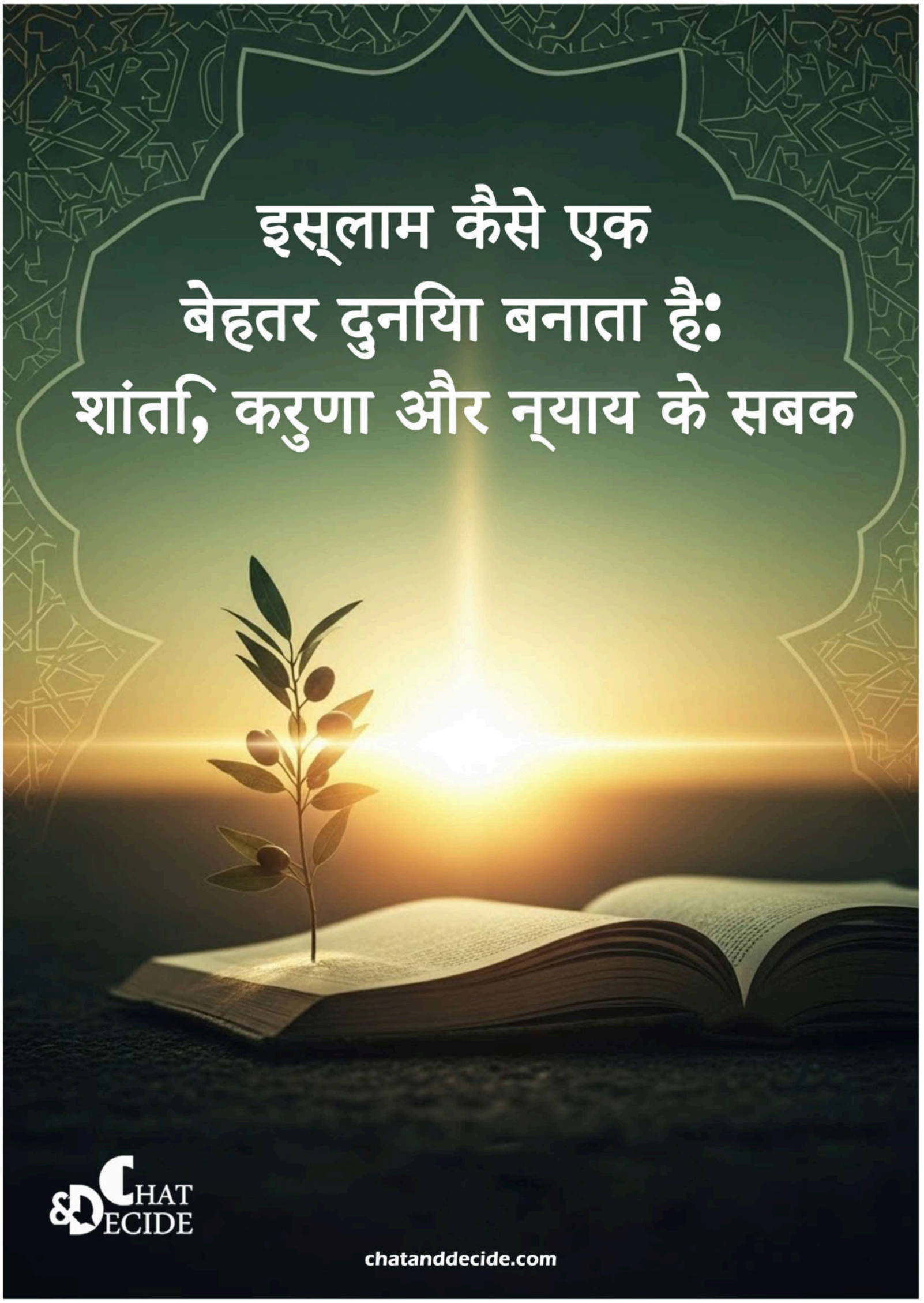
इस्लाम कैसे एक
बेहतर दुनिया बनाता है:
शांति, करुणा और न्याय के सबक
CHAT &DECIDE
chatanddecide.com

Artboard 2

CHAT &DECIDE
तीन दिन...
इस्लाम में रिश्तों को सुधारने का रहस्य है।
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

तीन दिन...
इस्लाम में रिश्तों को सुधारने का रहस्य है।

तीन दिन... इस्लाम में रिश्तों को सुधारने का रहस्य है।
क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि एक छोटी सी असहमति कैसे एक लंबी खामोशी में बदल सकती है?
और कैसे यह कटाव (संबंध-विच्छेद) ऐसे घाव छोड़ जाता है जो वर्षों तक रह सकते हैं?
इस्लाम ने एक साथ एक सरल और गहरा इलाज पेश किया है:
किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह अपने भाई से तीन दिन से अधिक समय तक संबंध-विच्छेद रखे।
क्योंकि यदि चुप्पी लंबी हो जाती है, तो वह एक घाव बन जाती है,
और यदि घावों को छोड़ दिया जाए... तो वे दिलों, रिश्तों और पूरे समाज को बिगाड़ देते हैं।
सिर्फ तीन दिन:
यह आत्माओं को शांत होने के लिए पर्याप्त समय है,
और द्वेष को जमने के लिए पर्याप्त नहीं।
यह नियम महज़ “सामाजिक नैतिकता” नहीं है...
बल्कि एक ऐसी व्यवस्था है जो रिश्तों को टूटने से बचाती है,
और दरार चौड़ी होने से पहले लोगों को सुलह की ओर ले जाती है।
कल्पना करें कि अगर इस सिद्धांत को हर जगह लागू किया जाए:
कितने रिश्ते वापस आ जाते?
और कितने दिल अपने दरवाज़े बंद करने से पहले ठीक हो जाते?
इस्लाम चाहता है कि इंसान साफ दिल के साथ जिए... झगड़ों से बोझिल होकर नहीं।
संबंध-विच्छेद (कटाव) एक खुला घाव है जिससे पूरा समाज रिसता है...
क्या यह वह वास्तविक सामाजिक सुरक्षा नहीं है जिसकी हम तलाश कर रहे हैं?

Artboard 4

CHAT &DECIDE
दूसरों की सफलता के बीच आप शांति कैसे महसूस करते हैं?
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

CHAT &DECIDE

दूसरों की सफलता के बीच आप शांति कैसे महसूस करते हैं?

दूसरों की सफलता के बीच आप शांति कैसे महसूस करते हैं?

कल्पना कीजिए कि आप किसी कार्यालय या रेस्तरां में हैं:
आपके सहकर्मी को पदोन्नति मिलती है,
दूसरा एक नई कार चला रहा है,
आपका दोस्त अपने खुशहाल परिवार की तस्वीरें पोस्ट करता है...
आपका दिल एक परिचित भावना से भारी हो जाता है: ईर्ष्या (हसद)।
परिवर्तन लाने वाले शब्द
"माशाअल्लाह" – यह स्वीकार करना कि सब कुछ ईश्वर की इच्छा से होता है।
"अल्लाहुम्मा बारिक" – दूसरों के लिए कल्याण (बरकत) की दुआ करना, दिल को ईर्ष्या और द्वेष से बचाना।
एक आस्था जो शब्दों से परे है
पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा: :"आपस में ईर्ष्या मत करो "
यह केवल रीति-रिवाज नहीं है, बल्कि एक जीवन पद्धति है जो दिल की रक्षा करती है और आत्मा को आराम देती है, और यह सिखाती है कि दूसरों का भला आपके लिए भी भला है।
जो इन सिद्धांतों पर जीता है, वह दूसरों की सफलता को खुशी के साथ देखता है, उसका दिल शांत (आश्वस्त) होता है, और उसका मन स्थिर होता है, जबकि उसके आस-पास की दुनिया तुलनाओं और ईर्ष्या में डूबी रहती है।
आपकी दिल की शांति भौतिक चीज़ें नहीं बनाती हैं, बल्कि यह दूसरों के लिए खुश होने की क्षमता है, बिना आपकी आत्मा डगमगाए।
इस्लाम आपको एक ऐसी जीवन पद्धति प्रदान करता है जो हर नकारात्मक भावना को वास्तविक प्रकाश और खुशी में बदल देती है।

Artboard 6

CHAT &DECIDE
जब ज़मीर मर जाता है, तो कौन सा क़ानून इंसान की हिफ़ाज़त करता है?
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

जब ज़मीर मर जाता है, तो कौन सा क़ानून इंसान की हिफ़ाज़त करता है?

जब ज़मीर मर जाता है, तो कौन सा क़ानून इंसान की हिफ़ाज़त करता है?

एक आधुनिक शहर की कल्पना करें... शानदार सड़कें, विशाल इमारतें, हर कोने में निगरानी कैमरे।
इसके बावजूद... अपराध बढ़ते जा रहे हैं।
एक व्यक्ति बिना डर के चोरी करता है, दूसरा अपने सबसे करीबी लोगों के साथ विश्वासघात करता है, और तीसरा केवल इसलिए कमज़ोर पर हमला करता है क्योंकि वह ऐसा कर सकता है।
सब कुछ व्यवस्थित लगता है... सिवाय दिलों के।
धरती पर एक और जगह...
एक संपूर्ण व्यवस्था है जो ऐसी चीज़ पर निर्भर करती है जिसे न तो कानून में रखा जा सकता है और न ही जेल से मजबूर किया जा सकता है: अंतरात्मा (ज़मीर)।
एक ऐसी जगह जहाँ मज़दूर पर अन्याय नहीं किया जाता क्योंकि वह गरीब है, न महिला पर क्योंकि वह कमज़ोर है, और न ही अजनबी पर क्योंकि वह “इस देश का नहीं है।”
क्या राज़ है?
वे एक ही सिद्धांत पर जीते हैं: “आप इंसानों के सामने जवाबदेह होने से पहले अपने रचयिता के सामने जवाबदेह हैं।”
और यही वह सिद्धांत है जिसे इस्लाम ने सिखाया और इसे समाज के निर्माण से पहले इंसान के निर्माण का आधार बनाया।
कानून शरीर को डराते हैं... लेकिन दिल की रखवाली कौन करता है?
इस व्यवस्था ने समाज का निर्माण अंदर से बाहर की ओर किया, जो इंसान के काम से पहले उसकी नीयत से, उसके हाथ से पहले उसकी अंतरात्मा से, और उसके दिमाग से पहले उसके दिल से शुरू होती है।
जो इस सिद्धांत के तहत जीया है...
उसे न कैमरों की ज़रूरत पड़ी और न अदालतों की... क्योंकि असली निगरानी उसके अंदर थी।

Artboard 8

CHAT &DECIDE

युगों का चमत्कार।

युगों का चमत्कार।

एक ऐसे समय में जब न छपाई (प्रिंटिंग) थी और न ही किताबें व्यापक रूप से फैली हुई थीं...
चंद शब्द सामने आए...
लेकिन उन्होंने दिलों, दिमाग़ों और सभ्यताओं के स्वरूप को बदल दिया।
वे शब्द जिन्होंने अन्याय का सामना किया, और पत्थर के बुतों से पहले आत्माओं के अंदर की मूर्तियों को तोड़ डाला।
वे शब्द जिन्होंने सृष्टि, आत्मा, करुणा, न्याय, समय और मृत्यु के बारे में बात की...
एक ऐसी भाषा में, जिसकी नकल आज तक कोई नहीं कर पाया।
ये शब्द एक "किताब" बन गए...
एक ऐसी किताब जिसके करीब समय भी नहीं आ सका... वह है क़ुरआन।
वह सवाल जो कोई भी सच्चा शोधकर्ता पूछता है:
एक रेगिस्तान में रहने वाला अनपढ़ व्यक्ति (उम्मी) ऐसे शब्द कैसे ला सका जो आज भी वैज्ञानिकों को हिला देते हैं?
यह सवाल साधारण नहीं है...
यह उस सत्य की ओर ले जाता है जिसने लाखों मनुष्यों को बदल दिया।

Artboard 10

CHAT &DECIDE
जब इंसान गिर जाता है...
तो रास्ता कहाँ से शुरु होता है?
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

जब इंसान गिर जाता है...
तो रास्ता कहाँ से शुरू होता है?

जब इंसान गिर जाता है... तो रास्ता कहाँ से शुरू होता है?

इंसान...
तब गिरता है जब वह अपना कम्पास (दिशासूचक) खो देता है।
तब गिरता है जब वह वासनाओं के पीछे ऐसे भागता है जैसे आग लकड़ी के पीछे भागती है।
तब गिरता है जब वह सत्य को छोड़कर बाकी सब चीज़ों से भर जाता है।
और आधुनिक दुनिया के इस सामूहिक पतन के बीच, पूरे इतिहास में एक अद्वितीय आवाज़ उठी जिसने मनुष्यों को याद दिलाया:
कि इंसान अपनी इच्छाओं का नहीं, बल्कि ईश्वर का सेवक बनने के लिए पैदा हुआ है।
और यह कि वास्तविक स्वतंत्रता वह नहीं है कि आप जो चाहें करें...
बल्कि वह है जो आपको नीचे खींचने वाली चीज़ों को पार कर जाए।
इस तरह मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने दुनिया के मूल्यों को पुनर्गठित किया:
उन्होंने इंसान के मूल्य को भौतिकता से ऊपर उठाया, और उसे आकाश (ईश्वर) से जोड़ा।
उन्होंने सम्मान, करुणा और गरिमा को फिर से परिभाषित किया।
उन्होंने मानवता को सिखाया कि महानता शक्ति में नहीं, बल्कि दिल की पवित्रता, इरादे की शुद्धता और मार्ग की स्वच्छता में है।
जो उन्हें सचमुच जान लेता है... वह पहले जैसा नहीं रहता।
क्योंकि वह पाता है कि इंसान को उठने के लिए बनाया गया है, न कि गिरने के लिए।

Artboard 12

CHAT &DECIDE
क्या हो अगर पैसा इंसाफ़ और अमन का रास्ता बन जाए?
CONTRACT
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

CHAT & DECIDE

क्या हो अगर पैसा इंसाफ़ और अमन का रास्ता बन जाए?

क्या हो अगर पैसा इंसाफ़ और अमन का रास्ता बन जाए?

इस दृश्य की कल्पना करें: एक युवा कुछ महत्वपूर्ण खरीदने के लिए एक दुकान में प्रवेश करता है, अपना पैसा देता है, और जानता है कि कीमत उचित है, विक्रेता ईमानदार है, कोई धोखा नहीं है, कोई अनुचित वृद्धि नहीं है।
उसे मन की शांति का एहसास होता है... वह जानता है कि उसके अधिकार सुरक्षित हैं, और हर वित्तीय लेनदेन स्पष्ट और निष्पक्ष कानूनों के अधीन है।
अब, इस व्यवस्था वाले एक पूरे समाज की कल्पना करें:
सबसे बड़ी संस्थाओं से लेकर सबसे छोटे दैनिक लेनदेन तक, हर पैसा स्पष्ट और निष्पक्ष तरीके से प्रसारित हो रहा है।
न सूद (ब्याज), न दूसरों का शोषण, न खरीद या बिक्री में धोखा।
अमीर, गरीबों की मदद करने में योगदान करते हैं, ताकि धन भ्रष्टाचार का नहीं, बल्कि न्याय का साधन बन जाए।
यह व्यवस्था केवल एक नैतिक विचार नहीं है, बल्कि एक एकीकृत जीवन पद्धति का हिस्सा है जिसे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने 1400 साल से भी पहले स्थापित किया था, जहाँ:
ज़कात गरीबी को रोकती है, और समाज में संतुलन बहाल करती है।
सूद (ब्याज) की मनाही लोगों को वित्तीय उत्पीड़न से बचाती है।
खरीद-बिक्री में न्याय हर व्यक्ति को अपने धन और भविष्य के बारे में आश्वस्त रहने देता है।
इस व्यवस्था में, धन केवल कब्ज़ा करने या व्यक्तिगत लाभ का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय और मानसिक सुरक्षा का एक उपकरण है: गरीबों को उनके अधिकार मिलते हैं, अमीर समाज के लिए भलाई लाते हैं, और पूरा समाज एक स्पष्ट और पारदर्शी व्यवस्था में जीता है।
पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं से ली गई यह वित्तीय व्यवस्था, व्यक्तिगत सुरक्षा, आर्थिक विकास, और सामाजिक न्याय को एक ऐसे तरीके से जोड़ती है जिसे दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा।

Artboard 14

CHAT &DECIDE
जब दिन एक ऐसी मशीन में बदल जाए जो आपके लिए काम करती है।
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

जब दिन एक ऐसी मशीन में बदल जाए जो आपके लिए काम करती है।

जब दिन एक ऐसी मशीन में बदल जाए जो आपके लिए काम करती है।

एक अजीब व्यवस्था है... जो धरती वालों द्वारा नहीं बनाई गई है।
यह दिन को छोटे, सटीकता से संतुलित पड़ावों में विभाजित करती है, मानो वे ऐसे समय अंतराल (ब्रेक) हों जो आपको अराजकता में गिरने या भटकाव में डूबने से रोकते हैं।
इस व्यवस्था में समय को यह अधिकार नहीं कि वह आपको निगल जाए... और व्यस्तता को आपकी आत्मा चुराने की अनुमति नहीं है।
हर कुछ घंटों में... आप रुकते हैं।
आप साँस लेते हैं।
आप अपने अस्तित्व से ऊपर वाली चीज़ से जुड़ते हैं।
फिर आप उस शक्ति से अधिक बल के साथ जीवन में लौटते हैं जिससे आप निकले थे।
यह है नमाज़ (सलात)।
कंपनियाँ अपने कर्मचारियों को "समय प्रबंधन" सिखाने के लिए लाखों खर्च करती हैं।
प्रशिक्षक "एकाग्रता, स्वच्छ मन, रिचार्ज" के बारे में पाठ्यक्रम बनाते हैं।
लेकिन यह व्यवस्था... सदियों पहले उन सबसे आगे निकल गई।
और विडंबना यह है... रहस्य तालिकाओं (समय सारणियों) में नहीं था और न ही उत्पादकता में... बल्कि उन क्षणों में था जो इंसान को उसके प्राकृतिक स्थान पर लौटाते हैं: एक प्राणी जिसके पास एक आत्मा है जो तभी काम करती है जब वह अपने रचयिता से जुड़ती है।
नमाज़... एक ऐसी व्यवस्था है जिसे यदि कोई भी इंसान जिए, तो वह पहले से कहीं अधिक संतुलित हो जाएगा।

Artboard 16

CHAT &DECIDE
सच्चाई...
अख़लाक़ नहीं,
बल्कि ज़िंदगी पर
हुकूमत करने वाला
क़ानून है।
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

CHAT & DECIDE

सच्चाई...
अख़लाक़ नहीं, बल्कि ज़िंदगी पर हुकूमत करने वाला क़ानून है।

सच्चाई... अख़लाक़ नहीं, बल्कि ज़िंदगी पर हुकूमत करने वाला क़ानून है।

कई संस्कृतियों में, सत्य (ईमानदारी) को “एक सुंदर सामाजिक चुनाव” माना जाता है।
लेकिन यहाँ... यह एक ब्रह्मांडीय कानून है।
यह केवल बातों में सत्य नहीं है... बल्कि काम में, वादे में, व्यापार में, रिश्तों में, और हर स्थिति में भी सत्य है।
यहाँ सफेद झूठ (छोटा झूठ) या ग्रे झूठ (अधूरा सत्य) के लिए कोई जगह नहीं है।
क्योंकि छोटा झूठ हमेशा एक बड़े धोखे (विश्वासघात) में समाप्त होता है...
और यह व्यवस्था (इस्लाम) इंसान को दूसरों से बचाने से पहले खुद से बचाना चाहती है।
आश्चर्य की बात क्या है?
एक भी मानवीय दर्शन ऐसा नहीं है जो 'सत्य' को जीवन के एक संपूर्ण तरीके में बदलने में सक्षम रहा हो...
सिवाय इस तरीके (मनहज) के।
इस्लाम का तरीका... शांति का मार्ग।

Artboard 18

CHAT &DECIDE
रिश्ते...
जब ज़ख़्मी होने से पहले दिलों को
महफ़ूज़ रखा जाता है।
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

रिश्ते... जब ज़ख्मी होने से पहले दिलों को महफ़ूज़ रखा जाता है।

रिश्ते... जब ज़ख्मी होने से पहले दिलों को महफ़ूज़ रखा जाता है।

एक ऐसी प्रणाली (व्यवस्था) है जो रिश्तों को संयोग पर नहीं छोड़ती...
और न ही केवल प्रेम को ही जीवन का बोझ उठाने देती है।
बल्कि यह सरल, स्पष्ट और मनभावन रेखाएँ खींचती है... जो हर रिश्ते को भावनाओं की अराजकता में गिरने से बचाती है। पड़ोसी का अपना स्थान है,
परिवार (अहल) का अपना अधिकार है, दोस्त का अपना सम्मान है,
और पति-पत्नी के बीच करुणा (रहमत) और न्याय है जिसके बिना कोई घर खड़ा नहीं हो सकता,
और यतीम (अनाथ) और मुसाफ़िर (अजनबी)... उन्हें परिस्थितियों की दया पर नहीं छोड़ा जाता।
यही इस्लाम का तरीका (मनहज) है।
यह एक ऐसी व्यवस्था है जो इंसान की प्रकृति को समझती है: कि दिल थक जाता है, और दिन बदलते हैं, इसीलिए यह ऐसे नियम निर्धारित करती है जो सबसे कठिन क्षणों में भी सम्मान को बनाए रखते हैं, और जब आत्माएँ डगमगाती है तब भी सुरक्षा (अमान) का निर्माण करते हैं।
आश्चर्य की बात यह है कि यह उन्हें शक्ति प्रदान करती है जिनकी कोई आवाज़ नहीं है, और उनकी गरिमा सुनिश्चित करती है जिन्होंने अपना सहारा खो दिया है...
यह संतुलन बहाल करती है जब अधिकार प्यार के साथ मिल जाते हैं, या जब रिश्ते इंसान की क्षमता से अधिक बोझ से थक जाते हैं।
और इसी कारण...
आप देखते हैं कि यह सुसंगत (आपस में जुड़े हुए) समाज बनाता है, इसलिए नहीं कि लोग आदर्श थे,
बल्कि इसलिए कि 'व्यवस्था' उनके मिजाज से अधिक न्यायपूर्ण, उनके उतार-चढ़ाव से अधिक दयालु,
और किसी भी क्षणभंगुर (क्षणिक) भावना से अधिक गहरी थी।
वह इस्लाम है... एक ऐसा तरीका जो रिश्तों को टूटने के बजाय पनपने देता है, और इंसान को दूसरे को... करुणा के एक नए स्तर से देखने देता है।

Artboard 20

CHAT &DECIDE
आदर्श...
और हर इंसान को इसकी ज़रुरत क्यों है?
chatanddecide.com
CHAT &DECIDE

CHAT & DECIDE

आदर्श... और हर इंसान को इसकी ज़रूरत क्यों है?

आदर्श... और हर इंसान को इसकी ज़रूरत क्यों है?

हर युवा के जीवन में—चाहे उसकी मातृभूमि, भाषा, या धर्म कुछ भी हो—वह खामोश लम्हा आता है जब वह स्वयं से पूछता है:
"मुझे किसका अनुसरण करना चाहिए? और मेरी दुर्बलता से ऊपर उठने में कौन मेरी सहायता कर सकता है, बिना मेरी आत्मा (अस्तित्व) को चुराए?"
और क्योंकि इंसान शून्य में नहीं जीता, वह हमेशा एक ऐसे नमूने की तलाश करता है जिस पर वह भरोसा कर सके: ऐसे व्यक्ति की जो क्रूरता के बिना शक्ति... दुर्बलता के बिना करुणा... अहंकार के बिना सफलता... और जीवन से अलगाव के बिना पवित्रता को जोड़ सके।
लेकिन समकालीन दुनिया कई आदर्श प्रस्तुत करती है... जिनमें से अधिकांश सतह पर चमकीले, लेकिन गहराई में भंगुर (कमजोर) हैं।
ऐसे आदर्श जो कृत्रिम रोशनी की तरह हैं... जो तेज़ी से चमकते हैं और फिर बिना कोई छाप छोड़े बुझ जाते हैं।
और यहीं पर ईमान (आस्था) द्वारा बनाए गए आदर्श की महानता प्रकट होती है:
एक आदर्श जो आपकी इंसानियत को कैद नहीं करता, बल्कि उसे सही राह दिखाता है।
जो आपको मिटाता नहीं, बल्कि आपके लिए एक ऐसा मार्ग खोलता है जिसमें आप स्वयं का सर्वश्रेष्ठ संस्करण बन सकें।
एक आदर्श जो मिथकों या कल्पनाओं पर आधारित नहीं है... बल्कि ऐसे मनुष्यों पर आधारित है जिन्होंने हमारी तरह ही आँसू और मुस्कुराहट, थकान और सफलता, दुर्बलता और शक्ति का अनुभव किया... फिर भी वे पूरी इंसानियत को ऊपर उठाने में सक्षम रहे।
निस्संदेह, सबसे महान आदर्श वे हैं जो आपके हर विवरण में आपके साथ जीते हैं:
- उन लोगों के साथ व्यवहार करने के तरीके में जिन्हें आप प्यार करते हैं।
- उस पर आपके धैर्य में जो आपके साथ बुरा करता है।
- जब आप पर अन्याय होता है तो आपकी बहादुरी में।
- जब लोगों के सिद्धांत बदल जाते हैं तो आपकी पवित्रता में।
- और जब दूसरे क्रूरता चुनते हैं तो आपकी करुणा में।

CHAT &DECIDE

और जब कोई व्यक्ति 1400 साल से भी पहले जीने वाले एक शख्स के जीवन-चरित पर चिंतन करता है, तो वह खुद को एक अद्वितीय व्यक्तित्व के सामने पाता है... एक ऐसी शख्सियत जिसने लाखों लोगों को प्रेरित करने में सफलता पाई, इसलिए नहीं कि वह ज़बरदस्ती करता था, बल्कि इसलिए कि वह दया करता था... इसलिए नहीं कि वह सबसे अमीर था, बल्कि इसलिए कि वह सबसे सच्चा था... इसलिए नहीं कि वह अनुयायियों की तलाश करता था, बल्कि इसलिए कि वह इंसान को दुनिया से बचाने से पहले खुद से बचाने की कोशिश करता था।

एक शख्स जिसने केवल एक प्रतीक बनने से संतुष्ट नहीं हुआ, बल्कि एक संपूर्ण विद्यालय बन गया जो आपको सिखाता है कि स्वार्थ से भरी दुनिया में एक सभ्य इंसान कैसे बनें...

एक ऐसे समय में स्थिर कैसे रहें जब सब कुछ बदल रहा है...

वह शख्स... जिसे कोई भी युवा—उसका धर्म जो भी हो—जब खोजता है, तो महसूस करता है कि उसका जीवन अधिक स्पष्ट, गहरा और सुंदर हो गया है...

वह है मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ।